इकाई 8 1911 की विफलता और गुओमिनदांग का उद्‌भव (1911-21)

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 चीन और विश्व युद्ध-I

8.2.1 बदलता आर्थिक परिदृश्य

8.2.2 युद्ध सामंतवाद

8.2.3 युद्ध सामंतवाद और विदेशी शक्तियाँ

8.2.4 युद्ध सामंतवाद और सामाजिक उथल-पुथल

8.3 जापान की इक्कीस माँगें

8.3.1 वर्साय की शान्ति सन्धि

8.3.2 सन्धि के विरुद्ध चीनी उपद्रव

8.4 चार मई का आन्दोलन

8.4.1 चार मई की घटनाएँ

8.4.2 नये राजनीतिक संगठनों का उद्‌भव

8.4.3 चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) का उदय

8.5 गुओमिनदांग (GMD) का उद्‌भव

8.5.1 सुंगजियाओरेन और संसदीय प्रजातन्त्र

8.5.2 सन यात्सेन (Sun Yatsen) के तीन सिद्धान्त

8.5.3 युवान शिकाई की मृत्यु और राजनैतिक विभाजन

8.6 सारांश

8.7 शब्दावली

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह स्पष्ट कर पायेंगे किः

- चीन की राजनैतिक परिस्थिति की प्रथम विश्व युद्ध से 1920 के दशक तक मुख्य विशेषताएं;
- 1911 की गणतन्त्रीय क्रान्ति की विफलता और चीन के राजनैतिक और सामाजिक परिदृश्य पर युद्ध सामन्तवाद का प्रभाव;
- वर्साय की सन्धि, जिसने शांडुंग में जापान के अधिकारों को मान्यता दी और मित्र शक्तियों के लिए चीन के समर्थन को नजरअंदाज किया, का प्रभाव और जापान की 21 माँगों ने कैसे एक हिसंक प्रतिक्रिया को उकसाया;
- 4 मई का आन्दोलन जिसने राष्ट्रवाद और साम्यवाद को उभरने में मदद की; और
- राष्ट्रीयवादी दल, गुओमिनदांग का उदय।

8.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम 1911 की क्रान्ति की विफलता से लेकर गुओमिनदांग के उद्‌भव तक की चीन की राजनीतिक स्थिति की जाँच पड़ताल करेंगे। 1911 की क्रान्ति में युआन शिकाई को नियंत्रित करने की सैन्य शक्ति का अभाव था जिसने संसदीय सरकार की स्थापना के प्रयासों को अपने सैन्य आधार का उपयोग करके कमजोर कर दिया। युआन ने एक ऐसे काल का सूत्रपात किया जिसे 'युद्ध सामंतवाद' कहा जाता था। इसको एक कमजोर केन्द्रीय सत्ता और स्थानीय प्रशासकों और शक्तिशाली व्यक्तियों द्वारा चिन्हित किया गया जिन्होंने अपनी निजी सेनाओं की कमांड संभाली। 1911 की विफलता ने चीनियों के लिए एक मजबूत सैन्य आधार की आवश्यकता को रेखांकित किया जिससे एक मजबूत राजनीतिक केन्द्र का निर्माण किया जा सके। प्रत्येक राजनीतिक दल ने अपनी स्वयं की सेना बनाई। प्रथम विश्व युद्ध में चीनियों ने मित्र राष्ट्रों की मदद के लिए मजदूर भेजे लेकिन वर्साय शान्ति अधिवेशन में फ्रांस और ब्रिटेन ने उनके हितों की अनदेखी की और उन्होंने शांडुंग में जापानियों द्वारा जर्मनी के अधिकारों के अधिग्रहण का समर्थन किया। इससे चीन में आक्रोश प्रस्फूटित हुआ और 1919 के 4 मई की घटना का जन्म हुआ जो एक बड़े बौद्धिक और सांस्कृतिक आन्दोलन का एक प्रमुख प्रसंग था। यह इकाई गुओमिनदांग राष्ट्रीय दल के उभरने की भी चर्चा करेगी।

8.2 चीन और विश्व युद्ध-I

1911 की क्रान्ति ने चीन के सामने खड़ी मौलिक समस्याओं को हल नहीं किया। विदेशी साम्राज्यवादी उपस्थिति और मजबूत हुई। एक स्थानीय आर्थिक अस्थिरता पनपी और क्रांति ने एक स्थाई राजनीतिक केन्द्र का निर्माण नहीं किया। लगभग जैसे ही क्रांति सम्पूर्ण हुई वैसे ही उसके मौलिक सिद्धान्त पलट दिये गए। गुओमिंदांग (GMD) के नेताओं जिन्होंने गुप्त संस्था के लक्ष्यों को त्याग दिया था और मांचु शासन व्यवस्था को उखाड़ फैंकने में सक्रिय भूमिका निभाई थी, उन्हें एहसास हुआ कि एक शक्तिशाली राजनीतिक केन्द्र के निर्माण के लिए, अपने राजनैतिक उद्देश्यों के समर्थन के लिए उन्हें एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता होगी। इस अवधि में उन्होंने युद्ध सामंतों की शक्ति को कम करने के लिए कार्य किया और इसके लिए कभी-कभी कम्युनिस्टों के साथ भी सहयोग किया। राजनैतिक केन्द्र के कमजोर होने और क्षेत्रीय शक्तियों के उभरने से, जिसमें से प्रत्येक में नियंत्रण के लिए होड़ लगी हुई थी, उससे आर्थिक और सामाजिक अशान्ति का निर्माण हुआ और चीन और मंगोलिया जैसे दूरस्थ क्षेत्रों ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी।

आधुनिक शिक्षा ने बुद्धिजीवियों का एक ऐसा वर्ग तैयार कर दिया था जो उन पुरानी प्रथाओं को पलटना चाहते थे जो चीन को पीछे ले जाती प्रतीत होती थी, उन्होंने चीन को मजबूत करने के मार्ग तलाशने शुरू किये और एक नई आधुनिक संस्कृति का निर्माण किया। ये विचार 4 मई के आन्दोलन के आधार थे जिसकी शुरुआत लगभग 1915 में हुई और जो 4 मई 1919 की घटना से चरम बिन्दु पर पहुँच गया। यह आन्दोलन मोन्टेस्क्यू, एड्म स्मिथ और जे. एस. मिल जैसे पश्चिमी विचारकों के साथ साथ रूस में बोल्शेविक विजय से भी प्रेरित था। रूस द्वारा जारशाही रूस के जमाने में लागू की गई असमान संन्धियों के परित्याग करने से रूस ने व्यापक प्रशंसा प्राप्त की। 4 मई के आन्दोलन के विचारों या नव संस्कृति आन्दोलन, जैसा इसे कहा गया, ने 1921 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) को जन्म दिया।

8.2.1 बदलता आर्थिक परिदृश्य

प्रथम विश्वयुद्ध जिस समय हुआ, वह चीन में गिरती राजनीतिक स्थिति का समय था, फिर भी इसने चीनी उद्योग को काफी बढ़ावा दिया। युद्ध के परिणामस्वरूप, पश्चिमी प्रतिद्वंद्विता का दबाव कम हो गया। चीनी उद्यमियों ने इस अवसर का लाभ उठाया। लेकिन औद्योगिक विकास का उछाल विदेशी प्रशासन वाले उन संधि बंदरगाहों में आया जो संधि व्यवस्था के जरिए युद्ध सामंतवाद से सुरक्षित थे।

कुछ समय से एक नए सौदागर वर्ग के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी। 1901 के बाद, उन्हें सरकारी नीतियों से पोषण मिला। 1914 तक 1000 से भी ऊपर वाणिज्य मंडल थे जिनकी सदस्यता 200,000 से भी अधिक थी। एक बड़े स्तर के उद्यमों पर विदेशी कंपनियों का वर्चस्व बना रहा। 1914 तक एक आधुनिक चीनी प्रशासनिक और उद्यमी वर्ग के उदय की शुरुआत हो चुकी थी।

8.2.2 युद्ध सामंतवाद

युद्ध सामंतवाद का असली संस्थापक, युआन शिकाइ, 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में शक्तिशाली होकर उभरा था। वह यह समय था जब मांचू सरकार के लिए सेना को पुनर्गठित करने की जिम्मेवारी उसके ऊपर थी। पहले भी, कमजोर होते साम्राज्य ने अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए निजी सेनाएँ संगठित करने की छूट दी हुई थी। अंत में साम्राज्य के लिए यह आत्मघाती सिद्ध हुआ, क्योंकि युआन की न्यू आर्मी उसके खिलाफ हो गयी। इसका परिणाम यह भी हुआ कि सेना चीनी राजनीति में गहराई से शामिल हो गयी और यह प्रवृत्ति बाद के दौर में भी बरकरार रही। GMD और साम्यवादी पार्टी दोनों के लिए एक मजबूत सैनिक समर्थन के अभाव में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना असंभव था।

जो भी हो, कुछ युद्ध सामंतों ने सत्ता हथियाने के बाद सुधारक बनने का प्रयास किया। उन्होंने जनता को कुछ आर्थिक लाभ दिलाने के प्रयास किये। लेकिन, इससे पहले कि वे कुछ कर पाते, वे सत्ता संघर्ष के पचड़े में फंस गये। बड़े युद्ध सामंतों का वर्णन करते हुए, जॉन फेयर बैंक ने टिप्पणी की है कि : ''एक अर्थ में बड़े युद्ध सामंत राजनीतिक शक्ति के गंभीर विघटन के प्रतीक थे। उन्होंने एक ऐसे नितांत खंडित समाज के शीर्ष पर बैठने का प्रयास किया जिसमें स्थानीय गुंडे, डाकू, सरदार और छोटे युद्ध सामंत सभी एक बदतर होती राजनीतिक अव्यवस्था के प्रतीक थे।''

गुट, युद्ध सामंतों के गुटों के अंदर भी बन जाते थे। उदाहरण के लिए, झीली गुट दो गुटों में बंट गया : एक वू पेईफू के अधीन और दूसरा क्याओ कुन के अधीन। क्याओ गुट फिर से विघटित हो गया। इन गुटों में इस बात को लेकर तू-तू मैं-मैं होती रही कि कौन किस पद पर रहेगा और किसके पास कौन सा राजस्व रहेगा। गुट फेंगतीइन (फैंग जी जुनफाए) गुटों में भी रहे, जो आगे चलकर ''नये'' और ''पुराने'' गुटों के नाम से जाने गये, क्योंकि इन गुटों में आधुनिक सैनिक प्रशिक्षण पाये युवा अधिकारियों और छिंग (Qing) सेना की सेवा में रह चुके अधिकारियों के बीच स्पष्ट मतभेद थे।

बड़े गुटों के बीच हुए युद्धों की ओर लोगों का ध्यान कहीं अधिक रहा क्योंकि ऐसे युद्ध ही इस बात का निर्धारण करते थे कि बीजिंग की राष्ट्रीय सरकार पर किसका प्रभुत्व रहेगा। होता यह था कि जब एक गुट एक वचन देता कि वह अपनी शक्ति बढ़ाकर दूसरे सैन्यवादियों को रोके रखेगा और एक शुद्ध केंद्र-केंद्रित नियंत्रण बनायेगा, तभी दूसरे प्रमुख युद्ध सामंत अस्थायी तौर पर अपनी ताकत संयुक्त करके उस गुट का गिरा देते। इस तरह, 1920 में झीली और फेंगतीइन गुटों ने आपस में सहयोग करके बीजिंग सरकार में अनहुइ गुट की शक्ति को समाप्त कर दिया, और अधिकांश प्रांतों को विजेताओं के हवाले कर दिया।

8.2.3 युद्ध सामंतवाद और विदेशी शक्तियाँ

युद्ध सामंतवाद से फैली अव्यवस्था और बीजिंग सरकार की स्थायी कमजोरी का परिणाम यह हुआ कि चीन विदेशी दबावों और अतिक्रमणों के प्रति विशेष रूप से असुरक्षित हो गया। लेकिन साथ ही साथ, इस व्यापक अव्यवस्था के कारण विदेशी गतिविधियाँ सीमित रही और विदेशी उद्यमों के हाथों चीन के आर्थिक शोषण में बाधा पड़ी। युद्ध सामंतों ने समय-समय पर विदेशी कम्पनियों पर कराधान को मनमाने ढंग से बढ़ा दिया। सिपाहियों और लुटेरों ने विदेशी जान-माल को नुकसान पहुंचाया। उदाहरण के लिए, सात वर्षों की अवधि में एक ही जिले में 153 अमेरिकी व्यक्तियों या कम्पनियों को लूट लिया गया। लूटमार और युद्ध ने सामान्य व्यापार और व्यापारिक गतिविधियों को छिन्न-भिन्न कर दिया।

संपन्न विदेशी सिपाहियों ने चीनी युद्धों में सचमुच भूमिका निभायी। उदाहरण के लिए, एक अंग्रेज एक युद्ध सामंत के शस्त्रागार का संचालन करता था। और एक और युद्ध सामंत के लिए तीन अमेरिकी विमान चालकों ने कुछ महीनों तक बमवर्षक विमान उड़ाये। कहीं अधिक महत्वपूर्ण तथ्य तो यह था कि चीनियों की बंदूकों के लिए तृप्त न होने वाली माँग का जवाब विदेशियों ने कानूनी पाबंदियों के बावजूद चीन में हथियारों का आयात करके दिया। शस्त्र व्यापारियों ने हथियार खरीदने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के हाथों हथियार बेच डाले। उन्होंने यह भी चिंता नहीं की कि इसके राजनीतिक परिणाम क्या हो सकते थे। कुछ विदेशी सरकारों ने वास्तव में कुछ चुने हुए युद्ध सामंतों को प्रायोजित किया। उदाहरण के लिए, युद्ध सामंतवाद के इस पूरे दौर में जापान चीनी सैन्यवादियों के साथ स्पष्ट तौर पर शामिल रहा।

सन् 1916 में जापानी सरकार के अन्हवी गुट के नेता दुआन किरूइ को पूरा समर्थन देने की नीति चलायी। इसका उद्देश्य चीन और जापान के बीच वित्तीय बंधन और राजनीतिक और आर्थिक सहयोग के निकट संबंध स्थापित करना था। आगामी दो वर्षों के दौरान जापान ने युआन को 15 करोड़ येन से भी अधिक दिए। यह राशि प्रकट तौर पर तो राष्ट्रीय विकास के लिए दी गयी थी, लेकिन युआन ने इसका इस्तेमाल व्यापक तौर पर अपने ही राजनीतिक और सैनिक उद्देश्यों के लिए किया। दोनों सरकारों के बीच एक सैन्य समझौता भी हुआ जिसके तहत जापान को चीन को सहायता और सलाहकार देने थे, जिससे चीन प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की मदद के लिए युद्ध भागीदारी सेना का गठन करता। यह सेना कभी यूरोप नहीं गयी, बल्कि उसने युआन की सैनिक शक्ति का विस्तार करने का काम किया। इससे जापान को चीन का राजनीतिक और आर्थिक अतिक्रमण करने में बहुत मदद मिली।

8.2.4 युद्ध सामंतवाद और सामाजिक उथल-पुथल

युद्ध सामंतवाद अकाल का कारण भी बना। कुछ प्रांतों में इन युद्ध सामंतों ने नकदी फसल के तौर पर अफीम की जबरन खेती करवायी जिससे खाद्य फसलें उगाने वाली भूमि कम पड़ गयी। उन्होंने सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण सुविधाओं के लिए आरक्षित सरकारी कोष को कम कर दिया जिसके कारण कुछ विनाशकारी बाढ़ें आयी। सैनिकों ने बोझा ढोने वाले पशुओं को अपने कब्जे में कर लिया जिससे सीधा आर्थिक नुकसान तो हुआ ही, खेती की उत्पादकता भी कम हो गयी। युद्ध सामंतों के दौर में उत्तर चीन में पड़े भयंकर अकाल स्पष्ट तौर पर युद्ध सामंतों के कुशासन की देन थे। उस दौर के उथल-पुथल में हजारों व्यक्तियों को अपने घरबार छोड़ देश के दूसरे हिस्सों में चला जाना पड़ा। कहा जाता है

कि युद्ध सामंतों के कारण चीन में ''इस शताब्दी का एक सबसे बड़ा आंतरिक पलायन'' हुआ। युद्ध सामंतवाद ने चीनी राष्ट्रवाद को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया क्योंकि इसने आंतरिक असमानता और अराजकता पैदा कर दी जिससे चीन विदेशी हस्तक्षेप के लिए भेद्य हो गया। उस अराजकता से व्यवस्था लाने की जरूरत एक शक्तिशाली बल था जो चीनी राष्ट्रवाद को आकार दे रहा था।

बोध प्रश्न 1

1) चीन पर युद्ध सामंतवाद के प्रभाव को लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

8.3 जापान की इक्कीस माँगें

जापान ने अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों को सामान्य तौर पर पूर्व में और विशेषतौर पर चीन में उस समय स्थायी करने का प्रयास किया जब पश्चिमी साम्राज्यिक ताकतें विश्व युद्ध में व्यस्त थीं। चीन-जापान संबंधों में एक बुनियादी समस्या चीन में पश्चिमी ताकतों की तुलना में जापान की भूमिका और शक्ति को लेकर जापान का असंतोष था। अमेरिका और यूरोपीय वित्त समूहों के पास जो रेलपथ और उत्खनन् की रियायतें थी उनमें से अधिकांश के एकाधिकारी स्वरूप के कारण जापान के लिए यह खतरा बन गया था कि उसे बढ़ रहे रियायती क्षेत्रों से पूरी तौर पर बाहर कर दिया जाएगा और वह राजनीतिक लाभों से वंचित हो जाएगा। चार ताकतों के (इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस) संघ के 15 अप्रैल, 1911 के समझौते के अनुसार चीन ने इन चार राष्ट्रों को चीन को कोश और पूँजी उपलब्ध कराने के लगभग विशेष अधिकार दे दिए। इस तरह के समझौतों को जापान ने चीन में जापानी निवेश की संभावनाओं को काटने के चीनी और यूरोपीय प्रयासों के अतिरिक्त प्रमाण के रूप में देखा। जापान ने चीन में अपने हितों की रक्षा और उनके विस्तार के लिए जो राजनीतिक उपाए किए थे वे इक्कीस माँगों के रूप में सामने आए।

इस आक्रामक नीति को मूर्त रूप देने में जापानी राजनीति की समस्याओं ने भी मुख्य भूमिका निभाई। हालाँकि हमें यहाँ जापान की मजबूरियों के विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है, लेकिन यह कहना पर्याप्त है कि बढ़ती जनसंख्या के लिए संसाधनों, बाजारों और निर्गम स्थलों तक पहुँच बनाने का दवाब और पूर्वी एशिया के नेतृत्व की महत्वकांक्षा सभी ने जापानियों को अपने हितों की रक्षा करने और नये हित हासिल करने की अपनी क्षमता पर सभी शंकाओं और असुरक्षाओं को दूर करने का मौका दिया। चीन में जापानी मंत्री ने सरसतापूर्वक और दो टूक जापान के इरादों के बारे में बताया था कि ''दुनिया भर में वर्तमान संकट मेरी सरकार को दूरगामी कार्यवाही करने के लिए मजबूर करता है। जब एक जौहरी की दुकान में आग लगती है तो पड़ोसियों से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे इसका लाभ उठाकर स्वयं की मदद नहीं करेंगे।''

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, इक्कीस माँगों में से कई माँगें ऐसी थी जिनमें यह प्रयास किया गया था कि जापान को चीन में वैसे ही अधिकार मिलें जैसे यूरोपीय ताकतों को एक लंबे समय से मिले हुए थे। इन माँगों के पीछे उत्प्रेरक का काम करने वाली जापान की शांडुंग में जर्मनी पर विजय थी। सवाल अब शांडुंग में जर्मनी को प्राप्त पट्टों के और आर्थिक अधिकारों के निपटारे का था और जापान उन्हें हथियाने को आतुर था।

चीनी राष्ट्रपति, युआन शिकाई को 7 मई, 1915 को इक्कीस माँगों की शक्ल में एक अल्टीमेटम दिया गया। यह वह दिन था जिसे चीनी छात्रों और राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रीय अवमानना दिवस के रूप में मनाया।

वास्तव में, इनमें कई माँगें थी जैसे –

- चीनी सरकार प्रभावशाली जापानी राजनीतिक, वित्तीय और सैनिक सलाहकार नियुक्त करे।
- जापानियों को चीन के आंतरिक भागों में अस्पताल, स्कूल और मंदिर बनाने का अधिकार दिया जाए।
- जापान को पुलिस प्रशासन में और जापान से हथियार और युद्ध सामग्री और विशेषज्ञों की आपूर्ति में हस्तक्षेप करने दिया जाए, और
- जापान ने वुचांग को चुजियेंग नानचांग पथ से जोड़ने वाले एक रेलपथ के निर्माण की माँग की।

8.3.1 वर्साय की शान्ति सन्धि

शांति संधि में भाग लेने वाले चीनी प्रतिनिधिमंडल में दक्षिण चीन के गणराज्य और बीजिंग सरकार दोनों के प्रतिनिधि शामिल थे। भविष्य को लेकर चीनी जनता में आह्लाद की जो स्थिति थी वह इस समय चकनाचूर हो गयी जब यह खबर वापस आई कि शांति सम्मेलन चीन की क्षेत्रीय समस्याओं को हल करना तो दूर, उल्टे शांडुंग क्षेत्र में जर्मनी के पट्टे वाले क्षेत्र को जापान को देकर जापान की स्थिति को मजबूत कर रहा था। इस कार्यवाही से पश्चिमी ताकतों की साम्राज्यिक हितों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि भी हो रही थी।

यह बात भी सामने आई कि इंग्लैंड, फ्रांस और युद्ध सामंतों की सरकारों के साथ कई गुप्त समझौते करके जापान को जर्मनी के अधिकार दे दिए गये थे। पेरिस में, चीन के प्रतिनिधियों ने अपने आपको दो कारकों के हाथों विवश पाया। पहले, शांडुंग क्षेत्र पर जापान के दावों को फरवरी, 1917 में जापान और इंग्लैंड, फ्रांस और इटली के बीच हुई एक गुप्त संधि में मान्यता दे दी गई थी। यह संधि उस समय सम्पन्न हुई थी जब चीन के युद्ध में प्रवेश के सवाल पर विचार-विमर्श चल रहा था। एक और क्षति पहुँचाने वाला रहस्योद्घाटन नीशीहारा ऋणों के संबंध में जापान और दुआन किरूइ की सरकार के बीच हुए समझौते के बारे में था। जापानी आर्थिक सहायता प्राप्त करने की गरज से, दुआन ने वचन दिया कि चीन शांडुंग में रेलपथों के प्रबंध के जापानी प्रस्तावों को "सहर्ष स्वीकार" कर लेगा। सक्षेंप में, दुआन ने इस समझौते के जरिए शांडुंग में जापान के विशेष हित को मान्यता दे दी थी।

इस तरह, सक्षेंप में, संधि के अंतर्निहित सिद्धान्त थे साम्राज्यवादी हितों को बनाए और बचाए रखना।

8.3.2 सन्धि के विरुद्ध चीनी उपद्रव

चीनी आशाओं के साथ विश्वासघात हुआ था। प्रभाव क्षेत्र, विदेशी सैनिक, विदेशी डाकघर, तार घर, दूतीय अधिकार क्षेत्र क्षेत्रीयतता, पट्टे वाले क्षेत्र, विदेशी रियायतें और निश्चित शुल्क दरें सब जैसी की तैसी बनी रहनी थी। यह लगता था कि चीन ने व्यर्थ ही अपना बड़ा मजदूर बल यूरोपीय मोर्चे पर भेजा था। लगता था जैसे सब कुछ गंवा दिया गया था। निराशा के इस बोध को शायद उस समय एक छात्र के इस विलाप में सबसे अच्छे ढंग से संजोया गया है –

''हमें बताया गया है कि युद्ध के बाद जो वितरण होगा, उसमें चीन जैसे राष्ट्रों को, उनकी सभ्यता, संस्कृति, उद्योग को निर्बाध विकसित करने का अवसर मिलेगा। हमें बताया गया है कि गुप्त प्रतिज्ञा पत्रों और जबरन समझौतों को मान्यता नहीं दी जाएगी। हमने इस नये युग के उदय की प्रतिक्षा की, लेकिन चीन के लिए ऐसा सूर्य उगा नहीं। यहाँ तक कि राष्ट्र के पालने (चीनी दार्शनिक, कन्फ्यूशियस, की गृहभूमि, शांडुंग) को भी चुरा लिया गया''।

चीनियों ने इसे (संधि को) चीन के साथ विश्वासघात समझा, और उनका देशभक्त और राष्ट्रीयता के बोध से उपजा रोश जबरदस्त ढंग से फूटा, जो बीजिंग में 4 मई, 1919 के प्रचंड प्रदर्शनों के रूप में सामने आया। इन प्रदर्शनों का लक्ष्य जापान, पश्चिमी साम्राज्यिक शक्तियों और बीजिंग के युद्ध सामंत थे जिन्होंने जापानी साम्राज्यवाद के मजबूत होने की प्रक्रिया को सुगम किया था।

8.4 चार मई का आन्दोलन

युआन शिकाई की मर्यादाहीन महत्वाकांक्षाएँ, युद्ध सामंतों का उदय और राजनीतिक स्तरीकरण 1911 की क्रांति के दुखद परिणाम रहे। इसी दौर में चीन में संस्कृति, दर्शन, शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव भी देखने में आया। चार मई की घटना को चीन की ''सांस्कृतिक क्रांति'', ''साहित्यिक क्रांति'', ''चीन का पुनर्जागरण'', ''ज्ञानोदय'' और ''पुनरुत्थान'' आदि भी कहा जाता है। यह कोई एक रूप या सुसंगठित आंदोलन नहीं था, बल्कि अनेक गतिविधियों का सम्मिश्रिण था। इस आंदोलन में विविध विचार काम कर रहे थे, लेकिन वे सभी एक समेकित घटना के अंग प्रतीत होते थे। वास्तव में, अधिकांश इतिहासकार यह स्वीकार करते हैं कि चीनी क्रांति की शुरुआत चार मई की घटना से होती है। हमें 1919 की चार मई की घटना और चार मई का आंदोलन कही जाने वाली घटना में भेद करना होगा। जो आंदोलन 1915 के आसपास शुरू हुआ था, उसे बाद में 1919 की घटना के बाद यह नाम दे दिया गया था।

8.4.1 चार मई की घटनाएँ

चार मई की घटना एक विशाल प्रदर्शन था। इस प्रदर्शन का आयोजन बीजिंग विश्वविद्यालय और कुछ दूसरी उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्रों ने 1919 में उस तारीख को तियानानमेन चौक पर किया था। ये छात्र वर्साय की उस संभावी संधि को विरोध कर रहे थे जिस पर प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर पेरिस में बातचीत हो रही थी। चीन में इस आशय की खबरें पहुँच रही थीं कि जापान ने यह माँग की थी कि जर्मनी ने असमान संधि व्यवस्था के तहत शांतुंग पर जो कब्जा कर लिया था, उस पर क्षेत्रातीत अधिकारों (extra-territorial rights) को स्वतः जापान को हस्तांतरण हो जाना चाहिए। इन खबरों में इस बात का संकेत भी मिलता था कि इंग्लैंड और फ्रांस जैसी दूसरी साम्राज्यवादी ताकतें जापान की माँग पूरी

करने की इच्छुक थीं। एक बार फिर चीनियों की राष्ट्रवादी भावनाओं को ठेस पहुँची। बीजिंग के युद्ध सामंतों का शासन तो शांडुंग संबंधी संधि पर हस्ताक्षर करने को तैयार था, लेकिन जनता ने साम्राज्यवादी भावनाओं को खुलकर व्यक्त किया और छात्रों ने आंदोलन में सबसे सक्रिय हिस्सा लिया। चार मई की जिस घटना में छात्रों की राजनीतिक सक्रियता चरम पर पहुँच गयी थी उसका विस्तार से विवरण देने से पहले उस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है जिसमें राष्ट्रवाद के पक्ष में साम्राज्यवाद के खिलाफ इतना बड़ा अभूतपूर्व छात्र आंदोलन उठ सका।

एक सुविदित तथ्य यह था कि बीजिंग स्थित युद्ध सामंत सरकार में जापान समर्थक तत्व थे। 1915 की जापानी इक्कीस माँगों को देखते हुए यह खतरे की घंटी थी। विभिन्न गुटों ने पेरिस शांति सम्मेलन में ताकतों के बीच चल रही गुप्त कूटनीति का विरोध किया। 1918 में, छात्रों और सौदागरों की ओर से सरकार को एक याचिका दी गयी जिसमें शांडुंग पर जर्मनी के पूर्व आधिपत्य को जापान को स्थानांतरित करने के मुद्दे पर गहन चिंता व्यक्त की गयी। अब चीन में इस आशय की खबर पहुँची कि पेरिस सम्मेलन में चीन के प्रस्तावों को ठुकरा दिया गया था तो, इससे प्रचंड साम्राज्यवाद विरोधी भावनाएँ भड़क उठीं। चीनियों के मन सभी ताकतों के प्रति संदेह से भर गये।

कुछ ही दिनों के अंतराल में कई समितियाँ उठ खड़ी हुई। 1 मई, 1919 और 3 मई, 1918 के बीच बीजिंग विश्वविद्यालय के छात्रों ने परिसर में सभाएँ की जो भाववेश से भरी थीं। छात्रों में यह महसूस किया गया कि उन्हें कार्यवाही करनी होगी, नहीं तो चीन की अधीनता का कभी अंत नहीं होगा। 4 मई को दोपहर बाद एक अभूतपूर्व स्तर का विशाल प्रदर्शन तियानानमेन (स्वर्गीय शांति का द्वार) चौक पर किया गया। बीजिंग विश्वविद्यालय और तेरह और कॉलेजों के हजारों छात्रों ने कई घंटों तक सड़कों पर जलूस निकाला। यह प्रदर्शन, कुल मिलाकर शांतिपूर्ण रहा। वैसे लड़ाकू छात्रों के एक गुट ने कुछ नागरिक और सैनिक अधिकारियों पर हमला किया। इन अधिकारियों के विषय में यह विश्वास किया जाता था कि उनकी भावनाएँ जापान समर्थक थीं। जनता के इस विरोध और आग्रह के जवाब में, चीन प्रतिनिधि मंडल ने पेरिस में चल रही बातचीत का बहिष्कार कर दिया और त्यागपत्र दे दिया। लेकिन यह काम 28 जून को ही हो सका।

8.4.2 नये राजनीतिक संगठनों का उद्‌भव

चार मई और 28 जून, 1919 के बीच बड़ी संख्या में जन सभाएँ और विचार-विमर्श हुए। छात्र जलूस निकालने और नये बुद्धिजीवियों को संगठित करने और दूसरे गुटों के साथ गठबंधन का प्रयास करने में लगे थे। सड़कों पर प्रदर्शन एक महीने और चले। सरकार ने बीजिंग विश्वविद्यालय को बंद करना और छात्रों को भड़काने के अपराध में काई युआनपी को बर्खास्त करना चाहा। सरकार जनता के समर्थन का सही आकलन नहीं कर पायी, जिसके बल पर छात्रों के प्रदर्शन दूसरे शहरों तक फैल गये। एक बीजिंग छात्र संघ गठित हो गया और बाद में मजदूर वर्ग की पूरी भागेदारी के साथ बड़े शहरों में आम हड़ताल की गयी। छात्रों ने सौदागरों, उद्योगपतियों और मजदूरों के साथ गठबंधन किए। आंदोलन, हड़तालें और प्रदर्शन हुए जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने व्यापक गिरफ्तारियाँ और सख्त कार्यवाही की। चीनी प्रतिनिधि मंडल का वर्साय की संधि का हिस्सा बनने से मना करना व्यापक विरोध प्रदर्शनों की पहली सफलता थी। आने वाले दौर में हमें विभिन्न सामाजिक गुटों के बीच घनिष्ठतर संपर्क और नये बुद्धिजीवी, सामाजिक और राजनीतिक संगठनों का उदय देखने को मिलता है। इस तरह, चार मई की घटना राष्ट्रवादी और वर्गीय हितों की एक सम्मिलित अभिव्यक्ति थी। 1919 की घटनाओं के बाद भी राष्ट्र का

सांस्कृतिक रूपांतरण और भी अधिक ताकत और तेजी के साथ चलता रहा। 1939 के दशक के प्रारंभिक वर्षों तक के काल को चीनी इतिहास में चार मई का युग कहा जाता है, क्योंकि तब तक नये विचार, दृष्टिकोण और मतों की निरंतर अभिव्यक्ति और परीक्षण चल रहा था।

8.4.3 चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) का उदय

सोवियत संघ में समाजवाद की जीत और निरंकुश जार शासन का तख्ता पलटने से चीन में अनेक युवा बुद्धिजीवियों को प्रेरणा मिली। तुरंत इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बहसें और विचार-विमर्श हुए कि क्या समाजवाद चीन की समस्याओं का समाधान था। लगभग उसी समय अंग्रेज दार्शनिक, बर्ट्रेंड रसेल चीन की व्याख्यान यात्रा पर था। बर्ट्रेंड रसेल ने चीन के लिए एक उदारवादी राजनीतिक व्यवस्था की वकालत की, क्योंकि उसके विचार में बोल्शेविकों का रास्ता अप्रासंगिक था। इससे और बहसें उठ खड़ी हुईं। पहले चीनियों को मार्क्स का जो लेखन उपलब्ध नहीं था, वह अब लोकप्रिय हो रहा था। विविध लेखों के अनुवाद भी उपलब्ध होने लगे थे। प्रमुख बुद्धिजीवियों में ली दाझाओ और चेन दूशू मार्क्सवाद की ओर झुके, जबकि हू शी और दूसरे बुद्धिजीवियों ने उदारवाद का समर्थन किया। मार्क्सवादी गुट ने अंत में 1921 में, चीनी साम्यवादी पार्टी का गठन किया। इसलिए यह कहना सही है कि चीन में साम्यवाद चार मई के आंदोलन का सीधा परिणाम था।

बोध प्रश्न 2

1) 21 माँगों पर संक्षेप में एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

2) 4 मई की घटना की लगभग 10 पंक्तियों में चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

8.5 गुओमिनदांग (GMD) का उद्‌भव

अपने जन्म से ही, गुओमिंदांग का इतिहास उसके नेताओं के व्यक्तित्वों का परस्पर प्रभाव रहा है। पहले सन यात्सेन (Sun Yatsen) और हुआंग शिंग और फिर जियांग जिशी (च्यांग काई शेक)। सन यात्सेन और हुआंग शिंग ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत गुप्त संगठनों के नेताओं के रूप में की, जिनका 1905 में तुंगमेंगहुई में विलय हो गया। उसके बाद से सन यात्सेन मृत्यु पर्यन्त उस संगठन का निर्विवाद नेता रहा। सन यात सेन की मृत्यु 1925 में हुई। तुंगमेंगहुई के नेतृत्व में मांचू विरोधी आंदोलन आगे बढ़ा तो अनेक अवसरवादी और स्वार्थी लोग इसमें शामिल हो गये। इसी तरह, यह महसूस करने वाले अनेक उच्चाधिकारियों और परंपरावादी विद्वानों ने भी विजेता पक्ष में शामिल हो जाने का निर्णय ले लिया कि मांचुओं के प्रति निष्ठावान रहने में कोई लाभ नहीं था। इस कारण तुंगमेंगहुई के लिए प्रगति और विकास की कोई एक समान नीति बनाना कठिन हो गया। सन यात्सेन के युआन शिकाई के पक्ष में राष्ट्रपति पद छोड़ने और कुछ समय के लिए राजनीतिक रूप से सक्रिय न रहने का भी गुओमिंदांग के संगठन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हुआंग शिंग भी निष्क्रिय रहा, उसने अपनी सेना को इस आशा में भंग कर दिया कि दूसरे सैनिक नेता भी ऐसा ही करेंगे। यह चीन का दुर्भाग्य रहा कि इस उदाहरणीय आचरण का अनुसरण नहीं किया गया।

8.5.1 सुंगजियाओरेन और संसदीय प्रजातन्त्र

सुंगजियाओरेन के राजनीतिक विचार सन और हुआंग से भिन्न थे। सुंग चीन में मंत्रिमंडलीय ढंग की सरकार स्थापित करने और उसकी उपलब्धियों में GMD को एक निर्णायक भूमिका देने को कृतसंकल्प था। सुंग स्वार्थी व्यक्ति नहीं, बल्कि उत्साही आदर्शवादी और प्रखर बुद्धि का था। उसकी आस्था संसदीय जनतंत्र, मंत्रिमंडलीय सरकार और दलीय प्रणाली में थी। उसकी आशा यह थी कि केवल इसी तरह की प्रणाली के माध्यम से चीन प्रगति कर सकता और स्थिर हो सकता था, और सैनिकों को नागरिक राजनीति से बाहर करने का यह सबसे अच्छा तरीका था। संवैधानिक व्यवस्था में पार्टी को एक प्रभावी माध्यम बनाने की गरज से सन ने अगस्त, 1912 में संगठन को फिर से दिशा दी। इस नये संगठन में तुंगमेंगहुई को केंद्र में रखा गया और दूसरी नवोदित छोटी पार्टियाँ उसमें शामिल हो गयीं। 1912-13 के चुनाव गुओमिंदांग के लिए भी और व्यक्तिगत तौर पर सुंगजिय़ाओरेन के लिए भी सफलदायी रहे। वह सरकार का गठन करने को तैयार था। युवान शिकाई ने सुंग की सफलता से भयभीत होकर संसद बुलाये जाने से पहले ही उसकी हत्या करवा दी।

गुओमिंदांग ने नेताओं ने समझ लिया कि सुंग की हत्या और पुनर्गठन ऋण का इस्तेमाल युआन की शक्ति को मजबूत करने के लिए किया जाएगा। उन्हें अपना राजनीतिक भविष्य अंधकारमय लगा। उन्होंने इस बात को समझा कि 1911 की क्रांति का अंत तब तक नहीं होता जब तक युआन के हाथों सत्ता में थी। इसी स्थिति में 1913 की दूसरी क्रांति हुई। लेकिन उस समय तक GMD अपने आपको व्यापक जनाधार से काट चुकी थी। युआन शिकाई को साम्राज्यवादियों का समर्थन प्राप्त था। उसी वर्ष नवम्बर में, युआन ने GMD को भंग करके उसे अवैध घोषित कर दिया। उसके तमाम समर्पित सदस्य भूमिगत हो गये।

8.5.2 सन यात्सेन (Sun Yatsen) के तीन सिद्धान्त

एक भूमिगत संगठन के रूप में उसने अपना नाम चीनी क्रांतिकारी पार्टी (गुओमिन्दांग) रख लिया। संगठन के नेता, सन यात्सेन का राजनीतिक दर्शन पार्टी की विचारधारा रही। सन ने तीन जन सिद्धांतों और तीन शासकीय चरणों पर जोर दिया।

तीन जन सिद्धांतों में थे :

- जनता का राष्ट्रवाद
- जनता का जनतंत्र, और
- जनता की आजीविका।

शासकीय चरणों में सरकार की उसकी अवधारणा का अभिप्राय यह था कि चीन को चरणों में एक प्रकार की सरकार से दूसरी उच्चतर प्रकार की सरकार की ओर बढ़ना चाहिए :

- पहले प्रकार की सरकार सैन्य सरकार होगी,
- दूसरे चरण में चीन को GMD के राजनीतिक संरक्षण में रहना था, और
- अंत में चीन में संवैधानिक सरकार होगी।

सन ने सबसे पहले 1905 में इन विचारों को व्यक्त किया था। ये विचार चीनी क्रांतिकारी पार्टी की अधिकारिक विचारधारा हो गये।

इस पार्टी के सदस्यों में सन ने निष्ठा और उंगलियों के निशान की माँग की। सदस्यों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया :

i) संस्थापक सदस्य,

ii) सक्रिय सदस्य, और

iii) साधारण सदस्य।

सन के निकटतम साथी, हुआंग शिंग ने प्रकट तौर पर इस तरह के सदस्यों के स्तरीकरण और उनके उंगलियों के निशान लेने पर आपत्ति की। मतभेद बढ़े और वे अलग हो गए। हुआंग शिंग के स्थान पर क्रांतिकारी विश्वसनीयता वाले सैनिक गवर्नर चेन कीमी को सन का मुख्य सहायक नियुक्त किया गया। लेकिन यह पार्टी एक जनाधार वाला संगठन नहीं बन सका, क्योंकि अनेक लोग इसे किसी गुप्त संगठन से बिल्कुल भी भिन्न नहीं मानते थे। पहले जिन कुछ बुद्धिजीवियों ने सन के साथ अपने आपको झोंक दिया था, उन्होंने अब इस पार्टी में शामिल होने से मना कर दिया। इसके स्थान पर उन्होंने यूरोपीय मामलों की अनुसंधान समिति का गठन कर लिया। तकाकथित तौर पर यह एक विवेचन गुट था, लेकिन वास्तव में इसने एक राजनीतिक दल की तरह काम किया।

चीनी क्रांतिकारी पार्टी के खाते में बहुत कम उपलब्धियाँ थीं। एक विफल विद्रोह के अलावा, इसकी एकमात्र दूसरी भूमिका युआन शिकाई के खिलाफ अभियान में रही। कुल मिलाकर यह पार्टी जनता के नेतृत्व संभालने में विफल रही, और उभरते सैनिक कुलीनों के खिलाफ किसी जन आंदोलन का नेतृत्व करने की स्थिति में नहीं थी।

8.5.3 युवान शिकाई की मृत्यु और राजनैतिक विभाजन

राजनीतिक परिदृश्य से युआन शिकाई के गायब हो जाने के बाद गुओमिंदांग (GMD) के तत्व विभिन्न गुटों और धड़ों में बंट गये। 1916-17 में, गुओमिंदांग (GMD) के पूर्ववर्ती सदस्य दक्षिण से वाम की ओर इस तरह गुटों में बंट गये : राजनीतिक अध्ययन समिति, श्रेष्ठ मित्र समिति, राजनीति सभा और जन मित्र समिति। राजनीतिक अध्ययन समिति उत्तरी सैन्यवादियों के साथ सौदेबाजी करना चाहती थी। जन मित्र समिति के अधिकांश सदस्य सन के अनुयायी और क्रांतिकारी पार्टी के सदस्य थे और वे दुआन किरूइ के कट्टर विरोधी थे। इन वर्षों के दौरान कैंटन स्थित दक्षिणी सरकार पुराने संविधान और पुरानी संसद की बहाली पर जोर देती रही। राजनीतिक अध्ययन समिति दक्षिणी सैन्यवादियों के गठबंधन में तो रही ही, लेकिन उसके उत्तरी सैन्यवादियों से भी संबंध रहे। इसके कारण सन यात्सेन को अंतहीन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

सन् 1917 के अंतिम महीनों में बीजिंग में फेंग ग्वाओजांग के राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद संसद के गुओमिंदांग गुटों ने कैंटन में एक विशेष सत्र शुरू किया और सन को प्रधान सेनापति चुन लिया। बीजिंग सरकार के साथ शांति के इच्छुक राजनीतिक अध्ययन समिति और जन मित्र समिति ने प्रधान सेनापति के पद को समाप्त कर दिया और उसे ऐसा पद दे दिया जिसमें बहुत अधिकार नहीं थे। सन ने अगस्त, 1919 में त्याग पत्र दे दिया। सन यात्सेन के इस अनुभव ने उसके मन में न केवल अपने कुछ पूर्ववर्ती अनुयायियों के प्रति, बल्कि दलगत राजनीति और संसदीय प्रणाली के प्रति भी तिरस्कार का भाव पैदा कर दिया। वह भिन्न ढंग से सोचने लगा। एक ओर तो वह कैंटन में एक मजबूत क्रांतिकारी अड्डा कायम करने को कृत संकल्प था, जिसके लिए उसने दूसरे सैन्य गुटों के साथ गठबंधन किया। दूसरी ओर, वह एक भिन्न युग की नयी चुनौतियों का जवाब देने में सक्षम एक संगठन, कायाकल्पित, गुओमिंदांग (GMD) के विचार पर चिंतन करने लगा। उसने नयी सोवियत सरकार के दूतों के साथ परामर्श शुरू कर दिया। उसके चिंतन में इस बदलाव के परिणामस्वरूप 1924 में, सोवियत साम्यवादी पार्टी की तर्ज पर गुओमिंदांग (GMD) का पुनर्गठन हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) सौ शब्दों में चीन की राजनीति में गुओमिंदांग (GMD) की भूमिका का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

2) सन यात्सेन (Sun Yatsen) के संसदीय राजनीतिक के साथ मोहभंग के क्या कारण थे, लगभग पाँच पक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

8.6 सारांश

सन् 1911 और 1919 के बीच के दौर में चीनी समाज में दूरगामी बदलाव हुए। 1911 में छिंग शाही राजवंश के अंत होने का परिणाम तुरंत एक बेहतर राजनीतिक व्यवस्था के रूप में सामने नहीं आया। एक ओर, सैन्यवाद, अधिनायकवाद, गुटवाजी और सत्ता संघर्ष राजनीतिक परिदृश्य में हावी रहे। दूसरी और साम्राज्यवादी शक्तियों ने आंतरिक उथल-पुथल का उपयोग अपने हितों को आगे बढाने के लिए किया। जापान ने चीन में विशेष रूप से उतना ही नियंत्रण हासिल करने की कोशिश की, जितना चीन में पश्चिमी शक्तियों ने नियंत्रण बनाया। राजनीतिक उथल-पुथल समाज के सभी वर्गों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि कैसे चीन को एक आधुनिक समाज कैसे बनाया जाये। इससे नये सामाजिक और बौद्विक आंदोलनों का जन्म हुआ और समाज के सभी क्षेत्रों में रचनात्मक गतिविधियों का विकास हुआ।

8.7 शब्दावली

मंडारिन : उच्च स्तरीय अधिकारी।

सैन्यवादी : यह शब्द युद्ध सामंतों के लिए प्रयुक्त होता है।

युद्ध सामंत : निजी सेनाओं के साथ क्षेत्रीय सैन्य व्यक्ति।

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 भाग 8.2 देखें

बोध प्रश्न 2

1 भाग 8.3 देखें

2 भाग 8.4 देखें

बोध प्रश्न 3

1 भाग 8.5 देखें

2 भाग 8.5 देखें

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY